सामान्य हिन्दी
(सब कक्षाओं के लिए)

लेखक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी०ए० ऑनर्स, एम०ए०

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

संस्करण : 2017
प्रतियाँ : 1000

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

टंकण एवं साजसज्जा : **अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. 94683 40497**
मुद्रक : **यू०आर०बी० प्रिंटिंग प्रैस, शैड नं. 2, रतपुर कॉलोनी, पिंजौर, मो. 9466111730, 9466112730**

दो शब्द

मेरी प्रिय आत्माओ !

मैं आप से निवेदन करता हूँ कि मैंने अनेक हिन्दी भाषा के व्याकरणों के अध्ययन एवं अनुशीलत के उपरान्त ''सामान्य हिन्दी'' नामक पुस्तक कईं वर्षों की कड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन से लिखी है । प्रस्तुत पुस्तक प्री-नर्सरी से लेकर बी.ए. तक के विद्यार्थियों के लिये लिखी गई है । मेरे कहने का तात्पर्य है कि यह हिन्दी भाषा की सब कक्षाओं के लिये हैं मुख्यतः इसके निम्नलिखित दो भाग हैं ।

भाग-1 में वर्णमाल, भाषा, वर्णविचार, शब्द विचार, शब्द भंडार, वाक्य विचार, छंद-अलंकार आदि का विशद् विवेचन किया गया है । इसके उपरांत भाग-2 में रचना जिसमें निबन्धलेखन, पत्रलेखन, कहानीलेखन, सारलेखन, विस्तारलेखन, अनुच्छेदलेखन आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है ।

मैं जानता हूँ कि हिन्दी में व्याकरण एवं रचना पर लिखित पुस्तकों की भरमार हैं परन्तु उन में से कुछ इतनी कठिन है कि सामान्य छात्रों के लिये उनका समझना असम्भव है । इसके विपरीत दूसरी कुछ इतनी संक्षिप्त एवं सामान्य है कि उनसे छात्रों को विषय का पर्याप्त बोध ही नहीं हो सकता । प्रस्तुत पुस्तक लिखने में जहाँ इन दोषों से बचने का प्रयास किया गया है वहाँ इसे सरल, सुबोध, सरस सर्वांगपूर्ण एवं उपयोगी बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है ।

वर्णन शैली जहाँ सरल एवं सरस है वहाँ भाषा सुबोध एवं सुगम है । लक्षण एवं उदाहरण इतने स्पष्ट है कि पढ़ते ही विद्यार्थियों को हृदयंगम हो जाते हैं । अक्षर विन्यास एवं अशुद्धि शोध दोनों सर्वथा नवीन व परीक्षोपयोगी अध्याय हैं । वस्तुतः पुस्तक को उपयोगी बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक राष्ट्रीय हिन्दी भाषा के सब कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए कल्पवृक्ष एवं कल्पसेतु की भाँति अत्यंत उपयोगी अवश्य सिद्ध होगी ।

पुस्तक के लिखने में मुझे सर्वश्री जयकिशन जी, रोशनलाल अग्रवाल, नरेश बंसल, सत्यपाल मोदी जी आदि ने सहयोग प्रदान किया हैं अतः इन मित्रों का स्तवन न करना मेरी कृतघ्नता होगी। विशेषतः श्री जयकिशन ने इस पुस्तक के सम्पादन में विशेष योगदान दिया हैं मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि उनके बिना प्रस्तुत पुस्तक का वर्तमान रूप में संयोजन न हो पाता। जिस अचिंत्य शक्ति प्रभु की असीम अनुकम्पा से मैं अपने संकल्प को मूर्तरूप दे सकता उसका भी कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ। मैं उन सभी लेखकों एवं कृतिकर्ताओं का भी अत्यंत धन्यवादी हूँ जिनकी कृतियों से संदर्भ उद्धृत किये हैं।

मैंने प्रस्तुत पुस्तक के लिखने में पूर्ण सावधानी बरती है। परन्तु संसार का प्रत्येक व्यक्ति अल्पज्ञ एवं अपूर्ण है। अतः यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकों से क्षमा चाहूँगा। पाठकगण त्रुटि को लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजें ताकि भविष्य में उसे सुधार जा सके।

धर्म पाल कपूर

तिथि : 4.2.2017

(**धर्मपाल कपूर**)
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618

निवेदन

श्रीमान धर्मपाल कपूर जी आजीवन ब्रह्मचारी रहकर अपनी लेखनी चलाते रहे हैं। उन्होंने अनेकों धार्मिक पुस्तकों का लेखन कार्य किया है। इसके अतिरिक्त उनकी साहित्य के क्षेत्र में भी अत्यधिक पकड़ है। इसी कारण वे सामान्य हिन्दी जैसी पुस्तक का सम्पादन करने में समर्थ हो पाये। जो प्रायः सभी कक्षाओं के प्रयोग में लाई जा सकती है।

इस पुस्तक में इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं का वर्णन दो भागों भाग-1 तथा भाग-2 में किया है। भाग-1 में भाषा, वर्ण-विचार, अक्षर-विन्यास, शब्द-विचार, वाक्य-विचार, छंद-अलंकार जैसे विषयों को बड़े ही सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत किया है। वर्णों का उच्चारण स्थान, प्रयत्न में आभ्यांतर और बाह्य प्रयत्न पर भी प्रकाश डाला गया है। इसे विशेष सारणी द्वारा परिलक्षित किया गया है। शब्द की उत्पत्ति तथा शब्दों के रूपों पर भी प्रकाश डाला गया है। उपसर्गों और प्रत्ययों के रूपों को विस्तार से समझाया गया है। सन्धि के नियमों का उल्लेख विशेष रूप से मिलता है। शब्द भण्डार अपार है।

पुस्तक में पारिभाषिक शब्दावली को भी स्थान दिया गया है। दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण वाक्यों का उल्लेख पुस्तक में चार चाँद लगा रहे हैं। मुहावरे तथा लोकोक्तियों का सविस्तार वर्णन किया गया है। भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये निबन्ध भी पुस्तक के महत्त्व को बढ़ा रहे हैं।

भाग-2 में निबंध लेखन, पत्र लेखन, कहानी लेखन, सार लेखन, विस्तार लेखन, अनुच्छेद लेखन, संवाद लेखन को दर्शाया है। यह कहना तर्क संगत होगा कि यह पुस्तक लगभग सभी कक्षाओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकेगी। वर्णमाला को चित्रों सहित समझा कर इस पुस्तक को और भी आकर्षित कर दिया गया है।

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि श्री धर्मपाल कपूर का गहन अध्ययन एवं अनुशीलन ही इस पुस्तक की विशेषता है । मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि श्री धर्मपाल कपूर जी इसी प्रकार साहित्य की सेवा करते रहे । ईश्वर उन्हें उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें ।

मेरा मानना है कि पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त सराहनीय एवं उपयोगी सिद्ध होगी । वे उसे अत्यधिक पसन्द करेंगे और इससे मिलने वाली सामग्री से लाभान्वित होंगे । जैसे मोतियों को चुन-चुन कर एक धागे में पिरो दिया जाता है उसी प्रकार श्री धर्मपाल कपूर जी ने सभी आवश्यक विषयों का बड़ी सावधानी से चयन करके उन्हें एक माला में पिरो कर पुस्तक का वर्तमान रूप तैयार किया है ।

अन्त में मैं पुनः उनके दीर्घायु की कामना करता हुआ परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वे इसी प्रकार लेखन कार्य करते रहें जिससे पाठक सदा इसी प्रकार लाभान्वित हो सकें ।

जय किशन, एम.ए.
गांव कोट, जिला पंचकूला
हरियाणा ।
मोबाइल : 9468340497

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात् ।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें ।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है ।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और सदुपयोग ही इसका मूल्य है ।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन ।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मो० : 9356301618

विषयसूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
	भाग - I (सामान्य हिन्दी)	
1.	वर्णमाला (चित्रों में)	1
2.	भाषा	26
	I. वर्ण-विचार (Orthography)	
1.	वर्ण-विचार (Orthography)	29
2.	अक्षर-विन्यास (Spelling)	38
	II. शब्द-विचार (Etomology)	
1.	शब्द-विचार	46
2.	संज्ञा और उसके भेद	49
3.	सर्वनाम और उसके भेद	64
4.	विशेषण और उसके भेद	69
5.	क्रिया और उसके भेद	76
6.	क्रिया विशेषणों और उसके भेद	92
7.	सम्बन्धवाचक अव्यय	94
8.	समुच्चयबोधक अव्यय (योजक)	94
9.	विस्मयादि बोधक (द्योतक)	96
10.	शब्द रचना	97
11.	संधि	107
12.	शब्दभण्डार	112
	(1) समानाकृति भिन्नार्थक शब्द	112
	(2) विपरीतार्थक शब्द	115
	(3) समानार्थक शब्द (पर्यायवाचक शब्द)	118
	(4) अनेकार्थक शब्द	122
	(5) एकार्थ शब्दों में भेद	126
	III. वाक्य विचार	
1.	वाक्य व वाक्य रचना	129

2.	वाक्य क्रम	132
3.	वाक्य के भेद	134
4.	वाक्य विश्लेषण	136
5.	विरामचिह्न	137
6.	वाक्य शुद्धि	147
7.	मुहावरे	156
8.	लोकोक्ति	186
9.	पारिभाषिक शब्दावली	198
10.	दैनिक प्रयोग में आने वाली कुछ महत्त्वपूर्ण टिप्पिणयाँ	201
11.	तकनीकी शब्दावली	204

IV. छन्द-अलंकार

1.	छंद-अलंकार परिचय	209
2.	छंद	209
3.	अलंकार	217

भाग-II (रचना)

1.	निंबध लेखन	223
2.	पत्र-लेखन	326
3.	कहानी लेखन	326
4.	सार लेखन (संक्षेपण)	332
5.	विस्तार लेखन (विस्तारण)	345
6.	अनुच्छेद लेखन	352
7.	अपठित लेखन	358
8.	संवाद लेखन	364

भाग - I (सामान्य हिन्दी)

वर्णमाला (चित्रों में)– स्वर

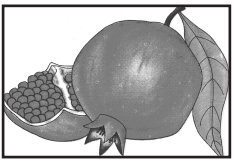

अनार

अ

अदरक

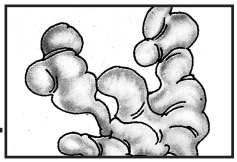

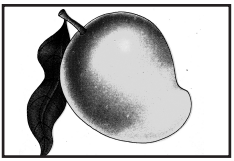

आम

आ

आरी

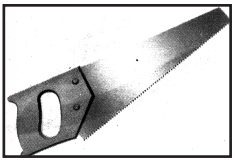

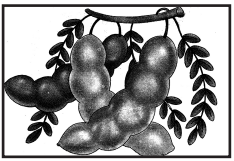

इमली

इ

इस्तरी

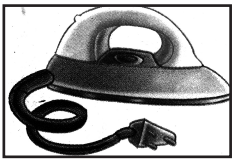

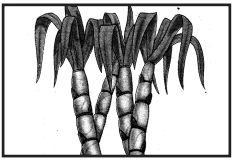

ईख

ई

ईंट

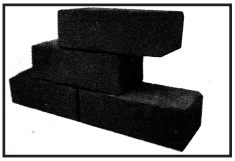

उस्तरा

उ

उल्लू

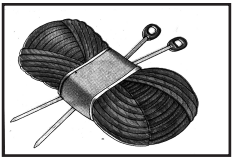

ऊन

ऊ

ऊँट

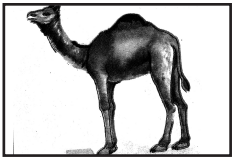

ऋषि

ऋ

ऋषभ

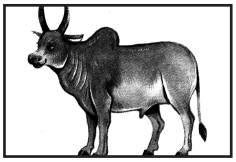

1

एक

ए

एड़ी

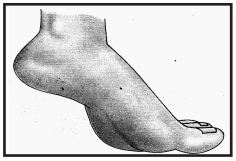

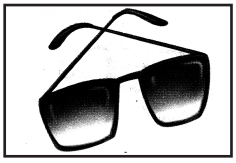

ऐनक

ऐ

ऐनक

ओखली

ओ

ओंठ

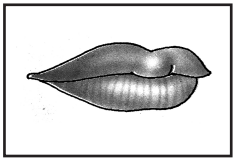

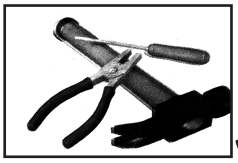

औजार

औ

औरत

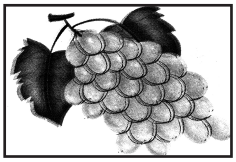

अंगूर

अं

अः

व्यंजन

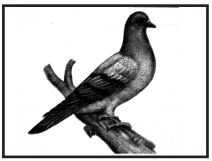

कबूतर

क

कलश

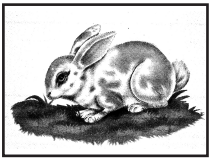

खरगोश

ख

खरबूजा

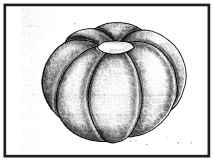

गमला

ग

गधा

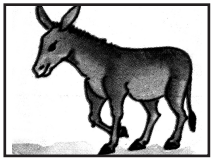

घर

घ

घड़ी

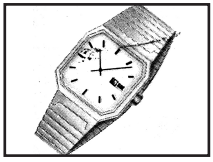

ङ

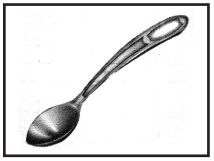

चम्मच

च

चरखा

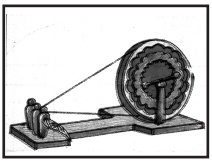

छतरी

छ

छत

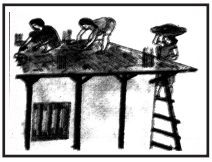

जग

ज

जहाज

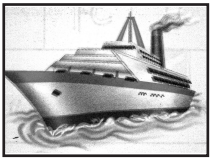

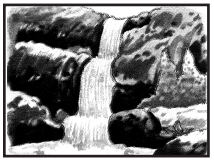

झरना

झ

झंडा

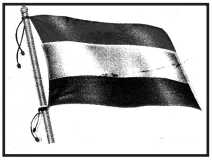

ञ

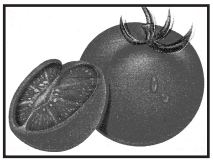

टमाटर

ट

टब

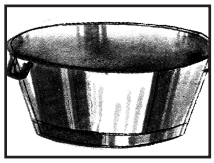

ठठेरा

ठ

ठेला

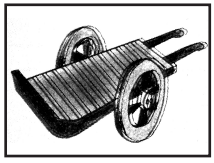

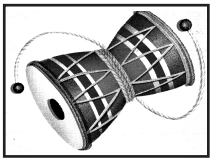

डमरू

ड

डिब्बा

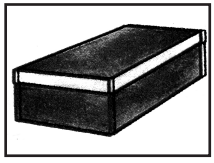

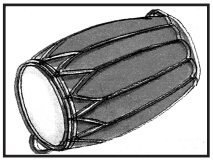

ढोलक

ढ

ढक्कन

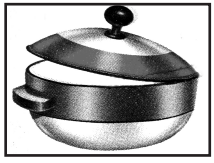

ण

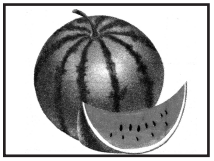

तरबूज

त

तख्ती

थरमस

थ

थन

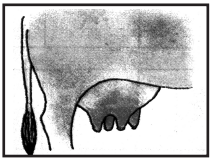

दवात

द

दर्जी

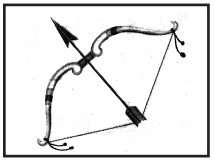

धनुष

ध

धागा

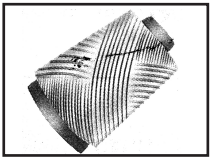

नथ

न

नल

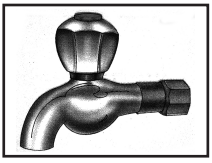

पहाड़

प

पतंग

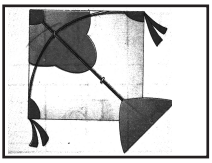

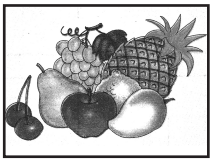

फल

फ

फव्वारा

बस

ब

बकरी

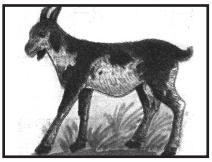

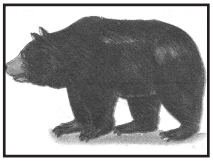

भालू

भ

भक्त

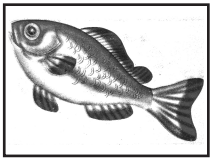

मछली

म

मकड़ी

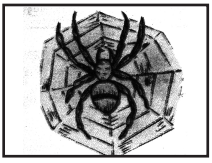

यज्ञ **य** याक

रथ **र** रानी

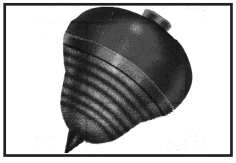

लट्टू **ल** लड़की

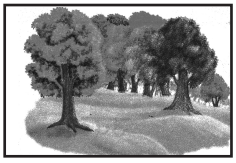

वन **व** वर्षा

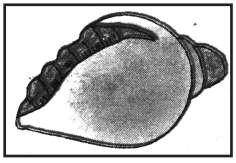

शंख **श** शलगम

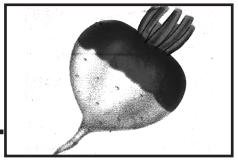

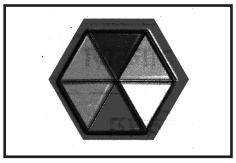

ष

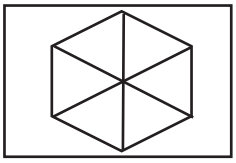

षटकोण

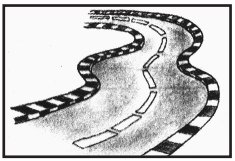

सड़क

स

सपेरा

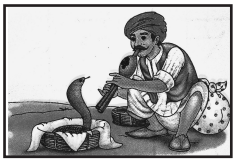

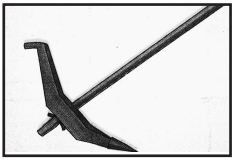

हल

ह

हलवाई

क्षत्रिय

क्ष

क्षत्रिय

त्रिशूल

त्र

त्रिभुज

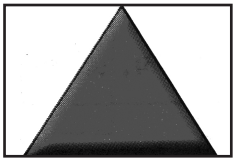

ज्ञानी

ज्ञ

ज्ञानी

श्र

श्रमिक

वर्णमाला

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

य	र	ल	व
श	ष	स	ह
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र

ड़	ढ़

स्वर गीत

अ से अनार जो भी खाता
अपनी सेहत खूब बनाता ।
आ से आम फलों का राजा,
स्वाद लगे तो पूरा खा जा ।
इ से इमली पेड़ों पर फलती,
इस की चटनी स्वाद है लगती ।
ई से ईख खूब है भाता,
चीनी, गुड़ और जूस बनाता ।
उ से उल्लू रात को जागे,
देखकर इसको सारे भागे ।
ऊ से ऊन भेड़ से मिलती,
मम्मी जिससे स्वेटर बुनती ।
ऋ से ऋषि ध्यान लगाए ।
हमें ज्ञान की बात बताए ।
ए से एड़ी जब आगे बढ़ती,
थप-थप-थम शोर है करती ।
ऐ से ऐनक रोज़ लगाते,
चीकू जी हीरो बन जाते ।
ओ से ओखली घर में लाओ,
धान कूटो, खिचड़ी बनाओ ।
औ से औरत अच्छी लगती,
मेरी मम्मी जैसी दिखती ।
अं से अंगूर बेलों पर लटके,
मिले तो मीठे, नहीं तो खट्टे ।
अः तो हरदम रहता खाली,
आओ बच्चो बजाएँ ताली ।

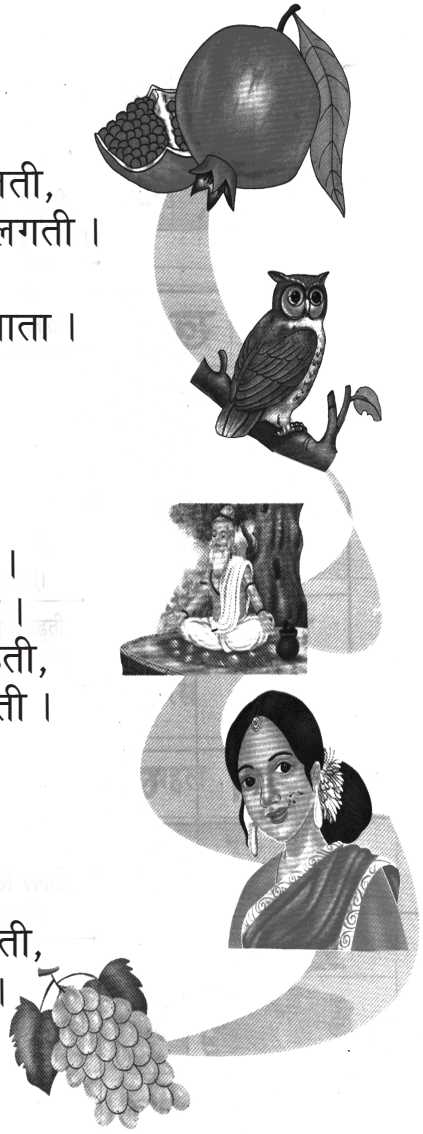

व्यंजन गीत

क का कबूतर गुटर-गूँ बोले,
ख का खरगोश आँखें खोले ।
ग का गमला सजा-सजाया,
घ की घड़ी ने समय बताया ।
ङ बैठा रहता खाली,
आओ बच्चो ! बजाएँ ताली...
च की चम्मच चम-चम करती,
छ की छतरी सुन्दर लगती ।
ज का जहाज़ बड़ा निराला,
झ का झंडा तीन रंगों वाला ।
ञ बैठा रहता खाली,
आओ बच्चो ! बजाएँ ताली...
ट की टमटम सरपट भागे,
ठ का ठठेरा नींद से जागे ।
ड का डमरू डम-डम बोले,
ढ का ढक्कन भेद न खोले ।
ण बैठा रहता खाली,
आओ बच्चो ! बजाएँ ताली...

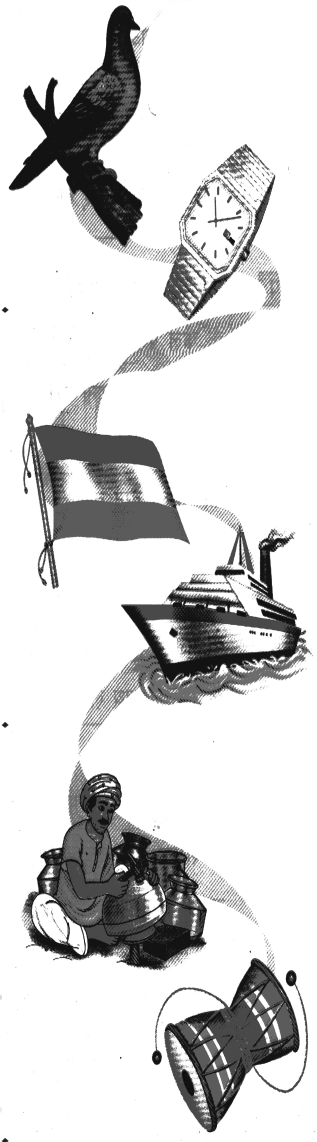

त का तरबूज बड़ा निराला,
थ से थन दूध देने वाला।
द की दरी आओ बिछाएँ,
ध के धनुष पर तीर चढ़ाएँ।
न से नमकीन मुँह में डाली,
आओ बच्चो! बजाएँ ताली...

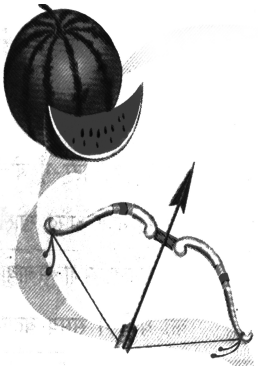

प की पतंग उड़े गगन में,
फ के फल पके चमन में।
ब की बतख चले पानी पर।
भ का भवन बड़ा ही सुंदर।
म की मछली तैरने वाली,
आओ बच्चो! बजाएँ ताली...

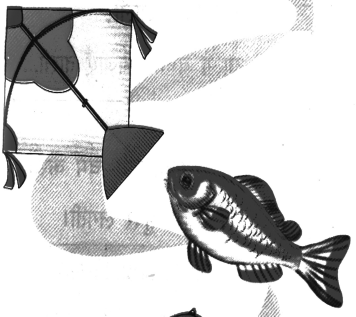

य के यज्ञ में हर कोई आया,
र के रथ को हाथ लगाया।
ल का लट्टू घूमे गोल,
व के वक्त का समझो मोल।
श के शरबत में शक्कर डाली,
आओ बच्चो! बजाएँ ताली...

ष का षट्कोण छह कोणों वाला,
स के सांप का खेल निराला।
ह की हथेली रहे न खाली,
आओ बच्चो! बजाएँ ताली...

मात्रा ज्ञान

आ (ा) की मात्रा

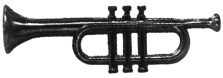

बाजा

ताला

माला

कार

आओ अब पढ़ें

आभा का बाजा

आभा आ । आभा इधर आ । उधर मत जा । अमर आया, बाजा लाया । आभा बाजा बजा । अमन गाना गा । अब काम कर । आज का काम आज कर ।

इन्हें भी बोलें

माल – माला	कल – काला	आज – आजा
जाल – जाला	नल – नाला	लाल – लाला

आओ मिलकर गाएँ

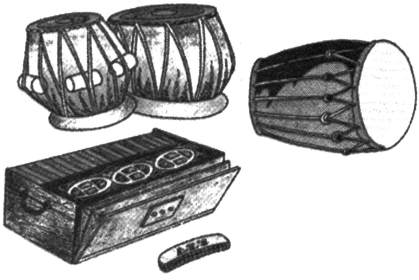

राम नारायण बाजा बजाता,
सा रे गा मा बाजा बजाता ।
राम नारायण ढोलक बजाता,
ढम ढम ढम ढम ढोलक बजाता ।
राम नारायण तबला बजाता,
तक धिन तक धिन तबला बजाता ।

इ (ि) की मात्रा

चिड़िया

किसान

गिरगिट

गिटार

किताब

दि	+	न	=	दिन	बि	+	टि	+	या	= बिटिया
र	+	वि	=	रवि	डि	+	बि	+	या	= डिबिया
गि	+	न	=	गिन	बि	+	क	+	ना	= बिकना
सि	+	र	=	सिर	वि	+	शा	+	ल	= विशाल
कि	+	ला	=	किला	प	+	हि	+	या	= पहिया
ति	+	थि	=	तिथि	ब	+	नि	+	या	= बनिया
खि	+	ला	=	खिला	ध	+	नि	+	या	= धनिया

आओ अब पढ़ें

हिना व निशा

हिना आ। हिना इधर आ। निशा आ। निशा किताब ला। दिन निकल आया। अमित दिन निकल आया। अब उठ। उठकर नहा। मिठाई खा। चिड़िया मत उड़ा। किताब ला। अब किताब पढ़। दस तक गिन।

ई (ी) की मात्रा

सीटी

मछली

दीपक

इमली

डफली

द + ही = दही इ + म + ली = इमली

खी + र = खीर ड + फ + ली = डफली

ची + ता = चीता दी + प + क = दीपक

घ + ड़ी = घड़ी क + मी + ज = कमीज

आओ अब पढ़ें

मीना की दादी

दादी आई। मिठाई लाई। खीर पकाई। चीनी मिला। दादी खीर खा। मीना इमली मत खा। पानी पी। दादी कहानी कह। दीदी डफली बजा। मीना दीदी गीत गा।

उ (ु) की मात्रा

लुटिया	जुराब	गुड़िया	कुरता
पुल	सुन	बुन	मिलजुल
साधु	धुन	मनु	बुलबुल
दुकान	रघु	सुई	दुलहन

आओ अब पढ़ें

सुमन की गुड़िया

रघु सुमन की बात सुन। धुली कमीज पहन। दुकान पर जा। सुई-धागा ला। सुमन गुड़िया का कुरता बना। सलवार भी बना। कुसुम गुड़िया की जुराब बुन। अब कुरता पहना, सलवार पहना, जुराब भी पहना। लाल चुनरी डालकर गुड़िया बन गई दुलहन।

तनुज जाकर खुरपा बना। अनुज सुबह कसरत कर। सुमन गुलाब-जामुन खा। मधुर-मधुर अब गीत सुना।	मनुज कछुआ मत पकड़। कुसुम अब कसरत कर। पुलक-पुलक कर मुसकुरा।

ऊ (ू) की मात्रा

भालू

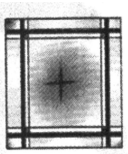

रूमाल

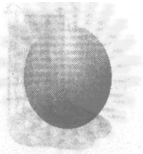

सूरज

चूड़ी

भूला	सूखा	चाकू	कूदा
धूप	मूली	सूखा	टूटा
फूल	दूध	धूल	खजूर

आओ अब पढ़ें

सूरज चमका

सूरज चमका। धूप निकली। धूल उड़ी। खूब गरमी पड़ी। दूब सूख गई। पूरन जूता पहनकर बाज़ार गया। आलू-कचालू लाया, खरबूजा लाया, तरबूज भी लाया। पूजा चाकू ला। टूटा चाकू मत ला। अब तरबूज काटकर खा। शहतूत चुन-चुनकर खा।

ऋ (ृ) की मात्रा

वृक्ष

ऋषि

मृग

गृह

कृषक

ऋचा	ऋतु	तृण	नृत
मृत	कृपाल	घृत	दृग
कृपा	घृणा	अकृत	मातृ
हृदय	गृह	ऋण	अमृत
कृपण	दृढ़	सृजन	वृथा

आओ अब पढ़ें

गरमी की ऋतु बीत गई। बरसात की ऋतु आ गई। बरस पानी, बरस। गरमी कम कर। ऋचा बाहर मत जा। तृण पर बरस, वृक्ष धुल गया। धरती पर तृण ही तृण। कृषक भी खुश। मृग आ। तृण चर।

ए (े) की मात्रा

केले

भेड़

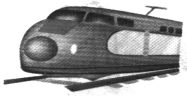
रेल

शेर

पेड़

आओ अब पढ़ें

मेला

एक दिन रमेश मेला देखने गया। रेणु भी उसके साथ गई। मेले में केले वाला देखा। रमेश ने पूछा–केले वाले, चार केले कितने के? केले वाले ने कहा–चार रुपये के चार केले।

राकेश ने चार केले लिए। उसने केले खाए। रेणु ने भी केले खाए। रेणु ने छिलके लिफाफे में रख दिए। रमेश ने छिलके सड़क पर डाल दिए। केशव ने तभी पुकारा–रमेश! रमेश पीछे मुड़कर देखने लगा। वह फिसला-धड़ाम। अब वह समझा - छिलके सड़क पर डालना गलत है।

ऐ (ै) की मात्रा

सैनिक

पैसा

थैला

कैमरा

बैल

सैर	मैदान	कैलाश	कैसा
तैराक	मैला	वैभव	बैठक
पैमाना	वैर	फैला	हैरान
नैना	पैदल	चैन	जैन

आओ अब पढ़ें

सैर

वैभव सवेरे उठता है। वह सैर करने जाता है। घास के मैदान में चलता है। कभी-कभी तैरता भी है। कैलाश उसका भाई है। वह एक सैनिक है। वह देश की सेवा करता है। कल वैभव का पैर फिसल गया।

वह आज पाठशाला पैदल कैसे जाएगा?

ओ (ो) की मात्रा

धोबी

घोड़ा

मोर

खरगोश

तोता

तोता	रोटी	गोल	मोनू	देखो
घोर	होता	सोना	चोर	धोना
पोता	कोना	रोता	भोर	मानो
गोला	भोला	जोर	खोट	टोला

आओ अब पढ़ें

मोर का शोर

मोर को देखो। मोर नाच रहा है। तोते को देखो, तोता शोर मचा रहा है। खरगोश को देखो, कैसे चुपचाप बैठा है। मोनू को देखो, वह रो रहा है। मोर को दाना डालो। तोते को अमरूद दो। खरगोश को घास दो। मोनू को रोटी दो। मोर दाना चुगता हैं तोता अमरूद खाता है। खरगोश कोमल घास खाता है। मोनू गोल रोटी खाता है।

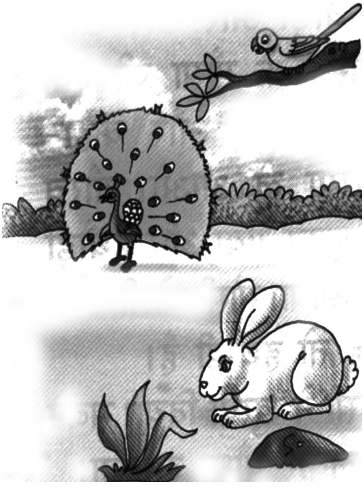

औ (ौ) की मात्रा

कौआ

नौका

औरत

चौकीदार

पौधा

तौलिया

गौरव	सौरभ	मौसी	कचौड़ी
हथौड़ी	लौ	फौज	भौरा
कौरव	कौम	बौना	चौदह
गौण	पौना	मौसम	लौह

आओ अब पढ़ें

सौरभ अपनी मौसी के घर गया। मौसी ने कचौड़ी बनाई। लौकी की खीर बनाई। सौरभ ने कचौड़ी और खीर खाई। सौरभ के मौसा जी एक पौधा लाए और कहा–खुरपा ले आओ। गौरव दौड़कर गया और हथौड़ी ले आया। मौसी बोली–अरे! यह तो हथौड़ी है।

मौसी ने खुरपा दिया। सबने मिलकर पौधा लगाया।

अं का प्रयोग

अंगूर

शंख

पंखा

कंघा

पंख

अंक	डंक	सुरंग	जंग	जंगल
पतंग	रंक	रंग	ठंडा	दंगा
नंदन	तंग	शंकर	दंग	बंधन
संग	गंदा	शंका	अंगद	ढंग

आओ अब पढ़ें

बंदर का मंदिर

गंगा किनारे जंगल था। जंगल में एक मंदिर था। मंदिर का पुजारी नगर को गया। बंदर पुजारी बन बैठा। बंदर ठंडे-ठंडे पानी से नहाया। माथे पर चंदन लगाया। टन-टन घंटी बजाई। लंगूर ने आकर शंख बजाया। हंस आरती गाने लगे। बंदर को सब पंडित जी कहने लगे। मंदिर पर लाल रंग का झंडा लहराता था। जंगल में मंगल हो गया। पुजारी आया और देखकर दंग रह गया।

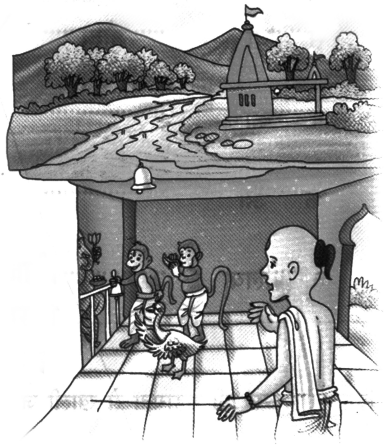

(ँ) चंद्रबिंदु

ऊँट

दाँत

आँख

अँगूठी

बाँसुरी

साँप

साँझ	चाँद	गाँव	मुँह
उँगली	माँ	पाँच	दाँत

आओ अब पढ़ें

आँख और दाँत

साँझ हो गई। अब यहाँ मत रुक। घर चल। बाँसुरी वहाँ रख। अब पढ़-पाँच और पाँच दस होते हैं। हँस मत। आँख मत मसल। चाँद निकल आया। दूध पीकर दाँत साफ कर। माँ की बात सुन। कान में तिनका, नाक में उँगली मत कर, मत कर, मत कर। आँख में अंजन, दाँत में मंजन, नित कर, नित कर, नित कर। अब सो जा। मुँह ढककर मत सो।

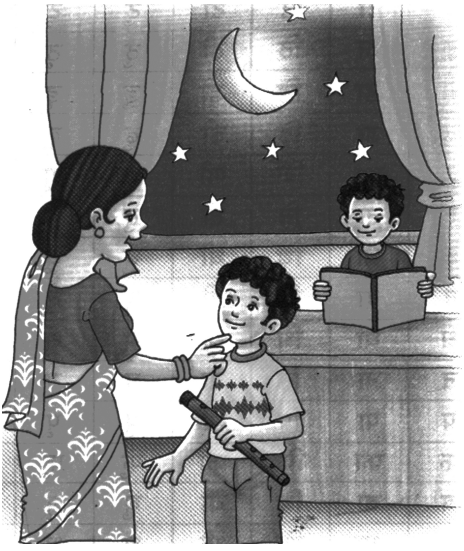

2. भाषा

प्रभु की अद्‌भुत सृष्टि में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसमें और दूसरे प्राणियों में मुख्य अन्तर यही है कि मनुष्य अपने विचारों तथा आन्तरिक भावों को दूसरों पर प्रकट कर सकता है और वे नहीं कर सकते। इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य संकेतों द्वारा भी अपने विचार प्रकट कर सकता है, किन्तु भाषा द्वारा यह कार्य सुगम और सहज होता है। संकेतों में समय अधिक लगता है और बात भी स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं होती। अतः भाषा ही विचार प्रकट करने का एकमात्र उत्तम साधन है।

सार्थक बोली का नाम ही भाषा है। हम कौवे की 'काएं-काएं', बिल्ली की 'म्याऊँ-म्याऊँ' और तबले की 'धक-धक' को भाषा नहीं कह सकते। इनको निरर्थक बोली अथवा अस्पष्ट ध्वनि कह सकते हैं। सार्थक बोली तो केवल मनुष्य ही बोलता है।

यह सर्वथा सत्य है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है एवं समाज अथवा दूसरे साथियों के सहयोग के बिना इसका जीवन-चक्र चल ही नहीं सकता। इसे अपने साथियों के सहयोग की प्रतिक्षण आवश्यकता है और यह सहयोग विचार प्रकट किए बिना कदाचित् इसे प्राप्त नहीं हो सकता और विचार भाषा के बिना प्रकट नहीं किये जा सकते। अतः सिद्ध हुआ कि भाषा संसार के व्यवहार का मूलमंत्र है।

विचार अथवा आन्तरिक भावों को दो प्रकार से प्रकट किया जाता है—बोल कर अथवा लिख कर। बोलना ध्वनियों से होता है और लिखना वर्णों (अक्षरों) से। ध्वनि आवाज़ को कहते हैं और वर्ण या अक्षर ध्वनियों के माने हुए चिह्न हैं। चूंकि भिन्न-भिन्न देशों की भाषाएं भिन्न-भिन्न हैं, जैसे इंग्लैंड की भाषा अंग्रेज़ी, जापान की जापानी, चीन की चीनी, जर्मन की जर्मनी। इसलिए एक ध्वनि अथवा आवाज़ के लिए भिन्न-भिन्न भाषाओं में

चिह्न भी भिन्न-भिन्न माने गए हैं । जैसे–'क' ध्वनि को हिन्दी में 'क' , और अंग्रेज़ी में 'k' लिखते हैं ।

भाषा का लक्षण

वह साधन, जिसके लिखने या बोलने से मनुष्य अपने विचारों तथा भावों को दूसरों पर सरलता से प्रकट करता है, भाषा कहलाता है ।

व्याकरण (Grammar)

प्रत्येक भाषा का आरम्भ वर्णों से होता है । केवल वर्णों से विचार प्रकट नहीं किये जा सकते । अतः वर्णों से शब्द बनते है । पृथक्-पृथक् शब्दों से भी कोई विशेष आशय प्रकट नहीं होता, इसलिए शब्दों का परस्पर मिलाप किया जाता है । शब्दों के जोड़ से वाक्य बनते हैं । वर्णों और शब्दों को मिलाने के भी नियम होते हैं । क्योंकि शब्दों के कई अर्थ और कई रूप हैं । यदि बिना नियम के शब्दों को मिलाया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है । इसलिए शुद्ध बोलने या लिखने के लिए शब्दों के रूपों क्रम आदि का तथा वर्णों के रूप परिवर्तन आदि के नियमों का ज्ञान आवश्यक है और वह ज्ञान व्याकरण के बिना नहीं हो सकता ।

(वि+आ+कृ+अन्) व्याकरण शब्द की उत्पत्ति है, जिसका अर्थ वह शास्त्र है जो भाषा में व्यवस्था बनाए रखता है और जो उसे परिमार्जित करके शुद्ध रूप में रखता है ।

व्याकरण के लक्षण

व्याकरण उस शास्त्र को कहते हैं जो किसी भाषा के रूपों और उनके नियमों का बोध कराए । इसलिए, प्रत्येक भाषा के शुद्ध बोलने और शुद्ध लिखने के लिए व्याकरण का ज्ञान परमावश्यक है ।

व्याकरण के भाग

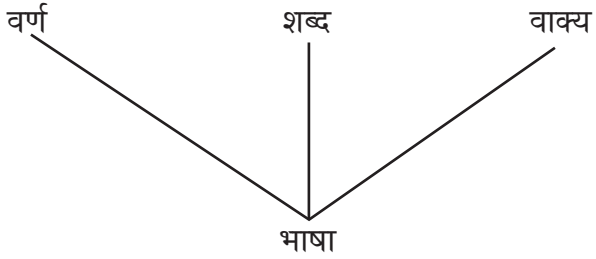

जैसा कि पूर्व लिखा जा चुका है । भाषा का आरम्भ वर्णों से होता है । वर्णों से शब्द और शब्दों से वाक्य बनते हैं । अतः इन वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों के विचारों से व्याकरण के तीन मुख्य भाग हैं– (1) वर्ण-विचार, (2) शब्द विचार, (3) वाक्य-विचार ।

1. वर्ण-विचार (Orthography) में वर्णों के भेद, आकार, उच्चारण और उन के मेल से शब्दों के बनाने के नियमों का वर्णन होता है ।

2. शब्द-विचार (Etymology) में शब्दों के भेद, रूपान्तर और व्युत्पत्ति आदि का वर्णन होता है ।

3. वाक्य-विचार (Syntax) में वाक्यों के भेद, रूपान्तर और व्युत्पत्ति आदि का वर्णन होता है ।

I. वर्ण विचार (Orthography)

1. वर्ण-विचार

वर्ण – जिस मूल ध्वनि को चिह्न प्रकट करता है और जिसके आगे टुकड़े नहीं हो सकते, उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं; जैसे–अ, इ, र्, व् आदि ।

हिन्दी में 44 वर्ण अथवा अक्षर है । इन्हें अक्षर इसलिए कहते हैं क्योंकि ये आकाश में नित्य रहते हैं ।

वर्णमाला (Alphabet)– प्रत्येक भाषा में प्रयुक्त होने वाले सारे वर्णों के समुदाय को वर्णमाला कहते हैं ।

लिपि (Script)– प्रत्येक भाषा जिस आकार में लिखी जाती है, उसे लिपि कहते हैं । क्योंकि यह किसी भाव को विशेष ढंग से लीपती है । हिन्दी भाषा जिस लिपि में लिखी जाती है, उसे देवनागरी लिपि कहते हैं और इससे भारत की अनेक लिपियों का जन्म हुआ है ।

वर्णों के भेद

वर्णों के दो भेद हैं–स्वर और व्यंजन ।

स्वर (Vowels) –किसी दूसरे वर्ण की सहायता के बिना जो वर्ण स्वयं स्वतंत्र रूप से बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं । हिन्दी में इनकी संख्या 11 है, जो इस प्रकार से हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ ।

व्यंजन (Consonants)–जो वर्ण स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते, उन्हें व्यंजन कहते हैं– क से ह तक 33 व्यंजन हैं ।

स्वरों के भेद–स्वरों के तीन भेद होते हैं–ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत ।

(क) ह्रस्व स्वर–जिनके उच्चारण में थोड़ा समय लगे या जिनकी केवल एक ही मात्रा हो, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं । अ के उच्चारण में जितना समय लगता है, उसे मात्रा कहते हैं । ह्रस्व चार हैं–अ, इ, उ, ऋ । इन्हें मूल स्वर अथवा एक मात्रिक स्वर भी कहते हैं ।

(ख) दीर्घ स्वर–जिनके उच्चारण में ह्रस्व से दुगुना समय लगे या जिनकी दो मात्राएं हों, उन्हें दीर्घ स्वर अथवा द्वि-मात्रिक स्वर भी कहते हैं । ये सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ । क्योंकि इन स्वरों की उत्पत्ति दो स्वरों के संयोग (मेल) से होती है, इसलिए इन को सन्धि स्वर अथवा संयुक्त स्वर भी कहते हैं; जैसे–

अ + अ = आ	अ + इ = ए
इ + इ = ई	अ + उ = ओ
उ + उ = ऊ	अ + ए = ऐ
ऋ + ऋ = ॠ	अ + ओ = औ

(ग) प्लुत स्वर–जिनके उच्चारण में ह्रस्व से तिगुना समय लगे, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं । प्लुत स्वर को प्रकट करने के लिए ३ का अंक साथ लिखा जाता है; जैसे–ओ३म् ।

उच्चारण के अनुसार स्वरों के भेद

उच्चारण के अनुसार स्वरों के दो भेद हैं–सानुनासिक और निरनुनासिक ।

(क) सानुनासिक – जिनके उच्चारण में मुख के साथ नाक की भी सहायता लेनी पड़े; जैसे–'गांव' का उच्चारण नासिका की सहायता के बिना अकेले मुख से नहीं हो सकता ।

(ख) निरनुनासिक – जिनका उच्चारण नासिक की सहायता के बिना केवल मुख से होता है; जैसे–'माला' में 'आ' का उच्चारण केवल मुख से होता है ।

मात्रा – मूल स्वर के उच्चारण करने में जितना समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं और ये स्वर जब व्यंजनों के साथ मिलते हैं तो लिखने में इनके रूप निश्चित होते हैं । इन्हीं रूपों अथवा आकारों को मात्रा कहते हैं । स्वरों के स्वतन्त्र रूप तथा मात्राएं निम्न प्रकार से हैं–

स्वर – आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं अः

मात्राएं– ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ ं ः

का कि की कु कू कृ के कै को कौ कं कः

विशेष–1. 'अ' का मेल व्यंजनों के साधारण रूप में पहले से हुआ रहता है। जिस व्यंजन में 'अ' का मेल नहीं होता; उसका रूप इस प्रकार होता है –(क्) इसे हलन्त कहते हैं।

2. जब स्वरों के साथ अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) का मेल दिखाया हो तो अनुस्वार की अवस्था में स्वर के ऊपर बिन्दु ; जैसे – (अं), और विसर्ग की अवस्था में पीछे खड़ी दो बिन्दियां लगाते हैं ; जैसे – अः।

3. र के साथ मात्राओं का मेल विशेष रूप में स्मरण रखने योग्य हैं–

र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः

व्यंजनों के तीन भेद होते हैं–

1. स्पर्श (Mutes) –जिनके उच्चारण करने के लिए जिह्वा को मुख के सभी स्थानों से स्पर्श करना पड़ता है, वे वर्ण स्पर्श कहलाते हैं। ये वर्ण पच्चीस हैं,जो पाँच वर्गों में विभक्त हैं। पाँच वर्णों की टुकड़ी को वर्ग कहते हैं और हर वर्ग का नाम अपनी टुकड़ी के प्रथम वर्ण के अनुसार रखा गया है; जैसे–

कवर्ग	क ख ग घ ङ
चवर्ग	च छ ज झ ञ
टवर्ग	ट ठ ड ढ ण
तवर्ग	त थ द ध न
पवर्ग	प फ ब भ म

2. अन्तस्थ (Semi-vowels) –जो वर्ण स्पर्श और ऊष्म के बीच में स्थित हैं उन्हें अन्तस्थ कहते हैं, वे चार हैं–य, र, ल, व।

3. ऊष्म (Sibilants) – जिन वर्णों के बोलने से मुख से ऊष्म (गर्म) श्वास निकलता है । ये चार हैं –श, ष, स, ह ।

संयुक्त व्यंजन–जब एक से अधिक व्यंजन एक स्वर के साथ मिल जाते हैं तो उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं, जैसे–

1. क् + ष् + अ = क्ष
2. त् + र् + अ = त्र
3. ज् + ञ् + अ = ज्ञ

अनुस्वर और विसर्ग – क्योंकि इनका उच्चारण व्यंजनों की भांति स्वरों की सहायता के बिना नहीं हो सकता, इसलिए प्रायः वैयाकरण इन्हें व्यंजनों में गिन लेते हैं ।

किन्तु ये व्यंजनों से सदा पीछे आते हैं, इसलिए इन्हें व्यंजन भी मानना ठीक नहीं । इसलिए इनका नाम संस्कृत-व्याकरणकारों ने अयोगवाह रखा है । (अ=न, योग=मेल, वाह=रखने वाला) क्योंकि ये न स्वरों से मेल रखते हैं और न ही व्यंजनों से ।

अनुस्वार का आकार (वर्ण के ऊपर बिन्दु) अं, विसर्ग का आकार (वर्ण के पीछे खड़े बिन्दु) अः है ।

वर्णों के उच्चारण स्थान (Place of Articulation)

उच्चारण स्थान – जो वर्ण मुख के जिस भाग से उच्चारण किया जाए, मुख का वह भाग उसका उच्चारण स्थान कहलाता है । उच्चारण स्थान छः हैं–

1. कण्ठ – अ, आ, कवर्ग, ह और विसर्ग कण्ठ से बोले जाते हैं; कण्ठ से बोले जाने वाले वर्णों को कण्ठ्य (Gutturals) कहते हैं ।

2. तालु – इ, ई, चवर्ग, य और श का उच्चारण जिह्वा को तालु पर लगाने से होता है । तालु से उच्चारण होने वाले इन वर्णों को तालव्य (Palatals) कहते हैं ।

3. मूर्द्धा – ऋ, टवर्ग, र और ष का उच्चारण जिह्वा को मूर्द्धा पर लगाने से होता है। मूर्द्धा से उच्चारण होने के कारण उन्हें मूर्द्धन्य (Cerebrals) कहते हैं ।

4. दन्त – लृ, तवर्ग, ल और स का उच्चारण जिह्वा को दाँतों पर लगाने से होता है । इन वर्णों को दन्त्य (Dentals) कहते हैं ।

5. ओष्ठ – उ, ऊ और पवर्ग ओष्ठ से बोले जाते हैं, इन्हें ओष्ठ्य (Labials) कहते हैं ।

6. नासिका – अनुस्वार और ङ, ञ, ण, न, म का उच्चारण मुख और नासिका से होता है, इसलिए इन्हें सानुनासिक (Nasals) कहते हैं ।

दो स्थानों से उच्चारण होने वाले वर्ण

कई ऐसे वर्ण हैं जिनका उच्चारण दो स्थानों से होता है; जैसे–

1. दन्तोष्ठ्य – व का उच्चारण दंत और ओष्ठ से होता है, इसे दन्तोष्ठ्य कहते हैं ।

2. कण्ठोष्ठ्य – ओ, औ का उचारण कण्ठ और ओष्ठ से होता है, इनको कण्ठोष्ठ्य कहते हैं ।

3. कण्ठ-तालव्य – ए, ऐ का उच्चारण कण्ठ और तालु से होता है, इन्हें कण्ठ तालव्य कहते हैं ।

विशेष –

1. अनुस्वार – बिन्दु (ं) और चन्द्र बिन्दु (ँ) के उच्चारण में यह अन्तर है कि अनुस्वार के उच्चारण में मुख और नासिका से श्वास निकलता है; जैसे–

(1) हंस (पक्षी) उड़ गया ।

(2) चारपाई को पंजाबी में मंझा कहते हैं ।

चन्द्र-बिन्दु के उच्चारण में नासिका का अधिक योग होता है और मुख का कम; जैसे–

(1) हँसी की बातों से हर एक हँस पड़ता है ।

(2) मँजे हुए बर्तन और मँजी हुई भाषा हर एक को पसन्द है ।

2. विसर्ग – विसर्ग के उच्चारण में श्वास को हल्का धक्का सा देकर मुख से निकालते हैं । इसके बाद जो व्यंजन अथवा स्वर आता है उसी के अनुरूप विसर्ग का उच्चारण होता है; जैसे –दुःख, प्रातः ।

3. हिन्दी में ज्ञ का उच्चारण ग्य जैसा होता है परन्तु इसका शुद्ध उच्चारण ज्ञ्ञ है ।

4. क्ष के उच्चारण में भी लोग साधारणतया भूल करते हैं । इसका उच्चारण ख (खत्री) नहीं, अपितु क्ष है ।

5. ड और ढ का एक उच्चारण और भी है, जो जिह्वा का अग्रभाग उलट कर मूर्द्धा पर लगाने से होता है । जैसे–बड़ा और गढ़ा । इस उच्चारण को द्विस्पष्ट कहते हैं । इसलिए हम इसके नीचे बिन्दी लगा देते हैं ।

6. ष का उच्चारण 'ख' होता है, किन्तु टवर्ग का योग हो तो श होगा; जैसे कष्ट=कश्ट, कृष्ण=कृश्न आदि ।

प्रयत्न (Efforts)

वर्णों के उच्चारण के समय पहले और पीछे वाणी द्वारा जो व्यापार होता है, उसे प्रयत्न कहते हैं, इसके दो भेद हैं–आभ्यांतर प्रयत्न और बाह्य प्रयत्न ।

(1) आभ्यांतर प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण के आरम्भ में होने वाले अन्दर के व्यापार को आभ्यान्तर प्रयत्न कहते हैं । इसके चार भेद हैं ।

(क) स्पृष्ट – जिनके उच्चारण के समय जिह्वा का तालु आदि भिन्न-भिन्न स्थानों से पूरा स्पर्श होता है, उनको स्पृष्ट कहते हैं । क से लेकर म तक सभी वर्ण स्पृष्ट हैं ।

(ख) ईषत्स्पृष्ट – जिनका उच्चारण करते समय वागिन्द्रिय ईषत् (थोड़ी खुलती) हैं । जैसे – य, र, ल, व ईषत्स्पृष्ट हैं ।

(ग) विवृत –जिनके उच्चारण में वागिन्द्रिय विवृत (खुली) रहती है; उनको विवृत कहते हैं । सब स्वरों का प्रयत्न विवृत है ।

(घ) ईषद्विवृत्त – जिनका उच्चारण करते समय वागिन्द्रिय थोड़ी खुली रहती है उन्हें ईषद्विवृत वर्ण कहते हैं । श, ष, स, ह ईषद्विवृत है ।

(2) बाह्य प्रयत्न

वर्णों के उच्चारण के अन्त में होने वाले बाहर के प्रयत्न को बाह्य प्रयत्न कहते हैं । इनके दो भेद हैं–

(क) अघोष – जिनके उच्चारण में श्वास का प्रयोग होता है; जैसे–क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स का प्रयत्न अघोष है ।

(ख) घोष – जिसके उच्चारण में नाद का प्रयोग होता है । सब स्वर तथा ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह का प्रयत्न घोष है ।

बाह्य प्रयत्न के अन्य दो भेद

(क) अल्पप्राण – जिनके उच्चारण में थोड़ा परिश्रम हो ; जैसे – वर्गों के पहले, तीसरे, पाँचवें वर्ण, य, र, ल, व, सब स्वरों और अनुस्वार का प्रयत्न अल्प प्राण होता है ।

(ख) महाप्राण – जिनके उच्चारण में अधिक परिश्रम हो, जैसे–वर्गों का दूसरा, चौथा वर्ण श, ष, स, ह और विसर्ग का प्रयत्न महाप्राण होता है ।

विशेष–

स्वराघात अथवा बल – किसी शब्द के उच्चारण में किसी स्वर पर दूसरों की अपेक्षा जो बल दिया जाता है, उसे स्वराघात कहते हैं ।

कल तुम जालन्धर जाओगे ।

यदि बोलते समय 'कल' के ल के अ पर बल दिया जाए तो उत्तर होगा, 'नहीं' मैं परसों जालन्धर जाऊंगा। यदि 'तुम' के म के अ पर बल दिया जाए तो उत्तर होगा 'नहीं' मैं नहीं। मेरा भाई कल जालन्धर जाएगा। यदि 'जालन्धर' के र के अ पर बल दिया जाए, तो उत्तर होगा, 'नहीं, कल मैं लुधियाना जाऊंगा' आदि प्रकार से एक ही वाक्य के अलग-अलग उत्तर होंगे।

साधारण वाक्यों में भी स्वराघात के कारण अर्थों में अन्तर आता है; जैसे–

(1) मैंने पत्र लिखा।

(2) मुझे पत्र लिखा।

पहले वाक्य में लिखा के 'ल' के 'इ' पर स्वराघात है और दूसरे के 'खा' के 'आ' पर।

इसका कोई विशेष नियम नहीं है। यह वक्ता की इच्छा पर निर्भर है। वह जिस भाव को महत्त्व देना चाहता है उसके प्रथम या द्वितीय स्वर को कुछ आघात दे देता है।

सवर्ण – एक ही स्थान तथा प्रयत्न से बोले जाने वाले वर्ण सवर्ण या सजातीय कहलाते हैं; जैसे – इ, ई।

असवर्ण – भिन्न स्थान तथा भिन्न प्रयत्न से बोले जाने वाले वर्ण असवर्ण या विजातीय कहलाते हैं; जैसे–इ, उ।

अगले पृष्ठों पर विद्यार्थियों के सुभीते के लिए उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न चित्र दिये जाते हैं।

उच्चारण स्थान का कोष्ठ

स्थान	कण्ठ	तालु	मूर्द्धा	दन्त	ओष्ठ	कण्ठ-तालु	कण्ठ-ओष्ठ	दन्त-ओष्ठ	नासिका
वर्ण	अ, आ कवर्ग क, ख ग, घ ङ ह विसर्ग :	इ, ई चवर्ग च, छ ज, झ ञ य श	ऋ टवर्ग ट, ठ ड, ढ ण र ष	तवर्ग त, थ द, ध न ल स	उ, ऊ पवर्ग प, फ ब, भ म	ए ऐ	आ औ	व	अनुस्वार ङ,ञ,ण न, म
नाम	कण्ठ्य	तालव्य	मूर्द्धन्य	दन्त्य	औष्ठ्य	कण्ठ्य तालव्य	कण्ठ ओष्ठ्य	दन्त ओष्ठ्य	सानु नासिक

आभ्यान्तर प्रयत्न कोष्ठ

प्रयत्न	स्पृष्ट	ईषत् स्पृष्ट	विवृत	ईषद्विवृत
	कवर्ग क, ख, ग, घ, ङ चवर्ग च, छ, ज, झ, ञ टवर्ग ट, ठ, ड, ढ, ण तवर्ग त, थ, द, ध, न पवर्ग प, फ, ब, भ, म	य र ल व	अ, आ इ, ई उ, ऊ ऋ, ए, ऐ ओ, औ	श ष स ह
वर्ण				

बाह्य प्रयत्न कोष्ठ

प्रयत्न	अल्पप्राण	महाप्राण	अघोष	घोष
	क, ग, ङ च, ज, ञ ट, ड, ण त, द, न प, ब, म य, र, ल, व अनुस्वार	ख, घ छ, झ ठ, ढ थ, ध फ, भ श, ष, स, ह विसर्ग (:)	क, ख च, छ ट, ठ त, थ प, फ श, ष, स	ग, घ, ङ ज, झ, ञ ड, ढ, ण द, ध, न ब, भ, म य, र, ल, व, ह स्वर
वर्ण				

2. अक्षर-विन्यास (Spelling)

भाषा का प्रयोग दो प्रकार से होता है, बोल कर या लिख कर। शुद्ध बोलने के लिए जहाँ वर्णों के शुद्ध उच्चारण स्थानों का ज्ञान आवश्यक है, वहाँ शुद्ध बोलने के लिए जहाँ वर्णों के शुद्ध उच्चारण स्थानों का ज्ञान आवश्यक है, वहाँ शुद्ध लिखने के लिए शुद्ध लिखने की रीति का ज्ञान भी आवश्यक है।

यद्यपि देवनागरी लिपि में यह विशेषता है कि लिखना बोलने के अनुकूल होता है, किन्तु वर्णों के शुद्ध उच्चारण स्थानों का ज्ञान न होने से प्रायः विद्यार्थी लिखने में आश्चर्यजनक अशुद्धियां करते हैं। यदि निम्नलिखित नियमों का पालन किया जाए तो छात्र इन साधारण अशुद्धियों से बच सकते हैं।

1. कई विद्वान् प्रचार करते हैं कि अ के साथ इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ की मात्रा का मिलाप कर देना सर्वथा उचित है, जैसे–अिस, अुस, अेक आदि। परन्तु ये प्रयोग व्याकरण की दृष्टि से सर्वथा अशुद्ध हैं।

2. इ और ई के प्रयोग में भी साधारणतः छात्र अशुद्धियाँ करते हैं; जैसे–स्त्रीवाचक शब्द मामी, नानी, वाणी, नारी आदि बड़ी ई से लिखे जाते हैं।

भाववाचक शब्द जो 'इ' से बनते हैं, वे सब 'ि ' से लिखे जाते हैं; जैसे– गति, मति, बुद्धि आदि।

3. ऋ का प्रयोग संस्कृत से आए हुए तत्सम शब्दों में होता है। उनका उच्चारण यद्यपि 'री' जैसा ही होता है तथापि उन्हें अभी तक वैसा ही लिखने की परिपाटी चली आती है; जैसे–कृपा, ऋषि आदि।

4. क्रिया के अन्त में ए, य अथवा ये तीनों के लिखने की प्रथा है; जैसे–दीजिए, लीजिए, किया जाए, सोचा जाए। इस प्रकार लेखक अपनी सुविधा के अनुसार लिखते हैं।

5. शब्दों के अन्तिम उ या ऊ के पश्चात् य और व नहीं लिखना चाहिए; जैसे—हवा, छुवा, कुवां आदि अशुद्ध हैं ।

6. ब के स्थान पर व और व के स्थान पर ब, ज के स्थान पर ज़, श और ष के स्थान पर स, ड के स्थान पर ढ, ण के स्थान पर न, एवं र के स्थान पर ड़ का प्रयोग करना वक्ता की गंवारता का द्योतक है ।

7. संयुक्त अक्षरों के आगे कोई मनमाना अपेक्षित स्वर लगाना बड़ी अशुद्धि है; जैसे अस्नान, मित्तर, इस्त्री आदि उच्चारण सर्वथा अशिक्षितों के ही होते हैं ।

कुछ ऐसी मुख्य अशुद्धियाँ जो प्रायः छात्र लिखने में करते हैं, नीचे दी जाती हैं । साथ ही छात्रों के लाभ के लिए उनके शुद्ध रूप भी दिये जाते हैं ।

(1) स्वरों के मेल से होने वाली अशुद्धियाँ

(क) अ की अशुद्धियाँ—

सभी व्यंजनों में 'अ' पहले ही शामिल होता है, किन्तु अनेक स्थानों पर 'अ' का उच्चारण न होने से प्रायः विद्यार्थी उसका लोप करके अक्षरों को संयुक्त बना देते हैं; जैसे—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सक्ता	सकता	आवश्यक्ता	आवश्यकता

(ख) इ, ई और उ ऊ की अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
साथि	साथी	स्त्रि	स्त्री
पानि	पानी	बाबु	बाबू

(2) संस्कृत में लिए गए उकारान्त और इकारान्त शब्दों को ईकारान्त और ऊकारान्त लिखना अशुद्ध है; जैसे—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
जाती	जाति	गुरू	गुरु
नीती	नीति	प्रभू	प्रभु
भक्ती	भक्ति	साधू	साधु
अती	अति	वायू	वायु

(3) कई विद्यार्थी 'इ' के स्थान पर अि और 'ऊ' के स्थान पर अु लिखते हैं जो सर्वथा अशुद्ध हैं; जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अिस	इस	अुस	उस

(4) र के साथ उ अथवा ऊ का संयोग प्रायः विद्यार्थी अशुद्ध करते हैं;

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गुरु	गुरु	रूस	रूस

(ग) ऋ की अशुद्धियाँ–कई विद्यार्थी ऋ के स्थान पर रि लिखते हैं, जो सर्वथा अशुद्ध है । ऋ और र के संयोग में बड़ी विचित्र अशुद्धियां की जाती हैं; जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
रितु	ऋतु	रिषि	ऋषि
हिरदय	हृदय	किरपा	कृपा
प्रिथवी	पृथ्वी	म्रित्यु	मृत्यु
गिरहस्थी	गृहस्थी	त्रितीय	तृतीय
दरिश्य	दृश्य	रिण	ऋण
किरपाण	कृपाण	किरषन	कृष्ण
किरतघन	कृतघ्न	किरतज्ञ	कृतज्ञ

(घ) ऐ और औ की अशुद्धियाँ– हिन्दी में ऐ का उच्चारण अय और औ का उच्चारण अव के समान होता है प्रायः विद्यार्थी भ्रम में कई अशुद्धियां करते हैं; जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
जैहिन्द	जयहिन्द	निर्भे	निर्भय
विस्मै	विस्मय	स्वभावो	स्वभाव
चुनाओ	चुनाव	झुकाओ	झुकाव

(ङ) ङ्, न् और अनुस्वार (ं) की अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सुंदर	सुन्दर	शन्ख	शंख
दंड	दण्ड	सम्बंध	सम्बन्ध
दंत	दन्त	कंठ	कण्ठ
संत	सन्त	इंद्र	इन्द्र

परन्तु आज कल अनुस्वार देकर लिखने की प्रथा प्रचलित होती जा रही है । ङ और ञ् के संयोग को प्रयोग से हटाया जा रहा है ।

(2) व्यंजनों की अशुद्धियाँ

(क) र की अशुद्धियाँ–(1) हलन्त र (र्) के दो रूप हैं । यदि हलन्त र का उच्चारण किसी स्वर से पीछे हो तो लिखने में यह र उसी वर्ण के ऊपर आता है; जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
धरम	धर्म	करम	कर्म
दुरगति	दुर्गति	वरष	वर्ष

(2) यदि हलन्त र (र्) का उच्चारण किसी स्वर से पहले होता हो तो लिखने में वह र् उसी वर्ण की पाई में मिलाया जाता है; जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
परेम	प्रेम	शरेय	श्रेय
गरामीण	ग्रामीण	विपर	विप्र

(ख) ण और न की अशुद्धियाँ—ण और न के उच्चारण में साधारण अन्तर होने से इनके लिखने में अशुद्धियां हो जाती हैं; जैसे—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ग्रहन	ग्रहण	स्मरन	स्मरण
आचरन	आचरण	आक्रमन	आक्रमण

(ग) ड़ और ढ़ की अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
पड़ना (पुस्तक)	पढ़ना	पढ़ना (गिरना)	पड़ना
चड़ना	चढ़ना	अकढ़ना	अकड़ना

(घ) श और ष की अशुद्धियाँ—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
दुश्टता	दुष्टता	कृषण	कृष्ण
वर्श	वर्ष	मनुश्य	मनुष्य
अभिशेक	अभिषेक	पुश्प	पुष्प
हरश	हर्ष	सपशट	स्पष्ट

(ङ) श और स की अशुद्धियाँ—श और स के उच्चारण में साधारण अन्तर होने से इनके लिखने में अशुद्धियाँ हो जाती हैं; जैसे—

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सान्ति	शान्ति	शेस	शेष
सीघ्र	शीघ्र	शंकट	संकट
अवकास	अवकाश	नास	नाश

(च) व और ब की अशुद्धियाँ–समानाकार होने से इनके लिखने में अशुद्धियां हो जाती हैं; जैसे–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बिष	विष	बिद्या	विद्या
बन	वन	वृहस्पति	बृहस्पति
बिलास	विलास	बेद	वेद

(छ) क्ष, त्र और ज्ञ की अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
परीकशा	परीक्षा	आग्या	आज्ञा
पत्तर	पत्र	पवित्तर	पवित्र
विदिया	विद्या	यग्य	यज्ञ
छेम	क्षेम	छिमा	क्षमा
खय	क्षय	ग्यान	ज्ञान
विग्यान	विज्ञान	परतिग्या	प्रतिज्ञा
मित्तर	मित्र	मन्तरी	मन्त्री

(3) फुटकर अशुद्धियाँ–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
कया	क्या	अछा	अच्छा
ग्या	गया	लड़कीयां	लड़कियां
लक्षमन	लक्ष्मण	मारग	मार्ग
निसवार्थ	निःस्वार्थ	महातमा	महात्मा
अभीमानी	अभिमानी	असमभव	असम्भव
यदी	यदि	कृतग्य	कृतज्ञ
शिरीर्कश्न	श्रीकृष्ण	अवश्यक	आवश्यक

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
हिर्दय	हृदय	पवित्तरता	पवित्रता
गुन	गुण	परेरना	प्रेरणा
उतपन	उत्पन्न	योग	योग्य
पुज्य	पूज्य	विशेश	विशेष
सरप	सर्प	परिशरम	परिश्रम
वीराजमान	विराजमान	प्रिथवी	पृथ्वी
भरातरीभाव	भ्रातृभाव	भाज्ञवान	भाग्यवान्
सिरी रामचन्द्र	श्रीरामचन्द्र	अगनी	अग्नि
मख्खन	मक्खन	करोध	क्रोध
कलेश	क्लेश	भकत	भक्त
शकति	शक्ति	मुकति	मुक्ति
विदवान	विद्वान्	परसिद्ध	प्रसिद्ध
पशचात्	पश्चात्	पत्नि	पत्नी
आस्तक	आस्तिक	प्राया	प्रायः
ईर्षा	ईर्ष्या	प्रथक्	पृथक्
परिवारिक	पारिवारिक	प्रगट	प्रकट
दृष्य	दृश्य	निरोग	नीरोग
पूज्यनीय	पूजनीय	महत्व	महत्त्व
राजनीतिक	राजनैतिक	विघन	विघ्न
श्रीमान	श्रीमान्	साहित्यक	साहित्यिक
सन्यासी	संन्यासी	सम्वत्	सम्वत्
स्वभाविक	स्वाभाविक	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप

विशेष–प्रायः विद्यार्थी आधे और डबल वर्ण संयुक्त करने में अशुद्धियाँ करते हैं । अतः प्रत्येक आधे और डबल वर्ण के रूप दिये जाते हैं–

आधे वर्णों के रूप

क्	ख	ग्	घ	ङ्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त्	थ्	द्	ध्	न्
प्	फ्	ब्	भ्	म्
य्	र्	ल्	व्	
श्	ष्	स्	ह्	
क्ष्	त्र्	ज्ञ्		

द्वित्व (डबल) वर्णों के रूप

वर्णों के पहले, तीसरे, पाँचवें, अन्तस्थ और श, ष, स वर्ण में द्वित्व हो सकता है, किन्तु वर्णों के दूसरे और चौथे वणों में द्वित्व नहीं होता; जैसे–

क्क	ख्ख	ग्ग	घ्घ	ङ्ङ
च्च	छ्छ	ज्ज	झ्झ	ञ्ञ
ट्ट	ठ्ठ	ड्ड	ढ्ढ	ण्ण
त्त	थ्थ	द्द	ध्ध	न्न
प्प	फ्फ	ब्ब	भ्भ	म्म
य्य	र्र	ल्ल	व्व	
श्श	ष्ष	स्स	ह्ह	